B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : Administrative Reforms of Firoz Tughlaq (PPT)

B.A. Part-2

Prepared by : Sri Pinku kumar

Asst. Professor (Dept. of History)

B.N. College Bhagalpur

Contact (whatsApp) no- 7982166260

Email id- kpinku348@gmail.com

फिरोज तुगलक का प्रशासनिक सुधार

- 20 मार्च, 1351 को मुहम्मद बिन तुगलक की सिंध (थट्टा के निकट) में अचानक मृत्यु हो जाने के कारण सरदारों ने फ़िरोजशाह तुगलक को राजसिंहासन पर बैठाया। गद्दी पर बैठने के बाद उसने बहुत सारे उन निर्णयों को वापस ले लिया जो कि उसके पूर्व के शासक के द्वारा लिए गए थे।
- उसने शरियत के अनुसार शासन किया और शासन के विभिन्न क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए, जिससे मध्यकालीन भारत में उनकी एक अलग पहचान स्थापित हुई। उनके द्वारा उठाए गए कदमों को हम निम्न शीर्षकों में बांट कर अध्ययन कर सकते हैं –

कृषि को प्रोत्साहन

- मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में उसकी योजनाओं और दुर्भिक्ष के कारण कृषि की अवनति हुई। फिरोजशाह तुगलक ने कृषि को प्रोत्साहित किया तथा उसकी उन्नति के लिए कई प्रयास किए।
- किसानों को उन्नत किस्म की फसलें एवं अच्छे बीजों के प्रयोग की सलाह दी गई। कृषि उत्पादन में वृद्धि के उद्देश्य से साम्राज्य में सिंचाई की व्यवस्था की गई।

कृषि को प्रोत्साहन-1

- सुल्तान ने पांच नहरों का निर्माण करवाया। इनमें सबसे महत्वपूर्ण नहर उलूगखानी नहर था, जिसके द्वारा यमुना का पानी हिसार तक पहुंचता था। इसकी लंबाई 150 कोस थी। दूसरी नहर रजबाह नहर थी जो 96 मील लंबी थी, सतलुज से घग्गर तक जाती थी। तीसरी मांडवी तथा दारमोर की पहाड़ियों के निकट से आरंभ होकर हांसी तक जाती थी। इनमें से यमुना नहर आज भी पंजाब को सींचती है।
- 1360 ई. में फिरोज ने सरस्वती तथा सलीमा नदियों के पानी को मिलाने के लिए एक बहुत बड़ी पहाड़ी टीले की खुदाई करवाई जिससे रिहंद, मंसूरपुर के क्षेत्रों की सिंचाई हो सके। फिरोज ने सिंचाई तथा यात्रियों की सुविधा के लिए 160 कुएं भी खुदवाये।
- इन नहरों की देखभाल के लिए योग्य और दक्ष अधिकारी नियुक्त किए गए। इन नहरों के निर्माण से विस्तृत क्षेत्र की सिंचाई होने लगी, बहुत सी बंजर भूमि भी कृषि योग्य हो गई, कृषि उपज में वृद्धि हुई, नई बस्तियां स्थापित हुई, तथा यात्रियों को पानी की सुविधा प्राप्त हो सकी। इसके अतिरिक्त राजस्व में काफी वृद्धि हुई और सुल्तान ने अतिरिक्त राजस्व को सार्वजनिक कल्याण के कार्यों पर लगाया।

उद्योग धंधे एवं व्यापार की उन्नति

- फिरोजशाह ने देश को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से उद्योग धंधों एवं व्यापार को भी काफी प्रोत्साहित किया। उसने 36 कारखाने स्थापित किए जहां विभिन्न वस्तुओं का निर्माण होता था। प्रत्येक कारखाना एक उच्च श्रेणी के मालिक के अधीन था।
- इन कारखानों में अधिकांश वस्तुएं महल तथा शाही उपयोग के लिए निर्मित होती थी। सुल्तान ने आंतरिक व्यापार को स्वतंत्र करने के लिए उस पर से अनेक कर हटा दिए, जिनसे वस्तुओं के आने-जाने में बाधा उत्पन्न होती थी।

उद्यानों को लगाया जाना

- फिरोजशाह ने राजस्व में वृद्धि के उद्देश्य से दिल्ली के निकट 1200 नए उद्यान लगवाए तथा अलाउद्दीन के शासनकाल के बचे हुए 30 उद्यानों को पुनः व्यवस्थित किया।
- इन उद्यानों में विभिन्न प्रकार के फल उत्पन्न होते थे, जिससे राज्य को एक लाख 80 हजार टंका की अतिरिक्त वार्षिक आय हो जाती थी।

रोजगारी दफ्तर की स्थापना

- फिरोजशाह ने बेरोजगारों को रोजगार देने के लिए एक रोजगार दफ्तर स्थापित किया। इस दफ्तर के संचालन के लिए एक पदाधिकारी की नियुक्ति की गई। किस विभाग के अंतर्गत सुल्तान ने बेरोजगारों की सूची तैयार करवायी और उनकी योग्यता के अनुसार उन्हें काम दिया।
- सुल्तान के आदेशानुसार जिले के बेरोजगार व्यक्तियों को जिले के अधिकारी कोतवाल के पास भेजा जाता था और कोतवाल जांच-पड़ताल करने के बाद उन्हें फिरोज के पास भेज देता था। फिर सुल्तान उनकी नौकरी की व्यवस्था करता था। सुल्तान की इस उदारता और तत्परता के चलते अनेक लोगों की रोजी-रोटी की समस्या हल हो गई।

दीवान-ए-खैरात की व्यवस्था

- फिरोज शाह तुगलक ने गरीब एवं असमर्थ मुसलमानों के लिए दानशाला की व्यवस्था की, जो दीवान-ए-खैरात नाम से जाना जाता था। इसके माध्यम से बहुत से विधवाओं तथा अनाथ लोगों की सहायता की जाती थी और बहुत से निर्धन मुस्लिम कन्याओं का विवाह संपन्न किए जाते थे। लोगों ने इस अनुदान का काफी लाभ उठाया।

खैराती अस्पताल की स्थापना

- फिरोज़ शाह तुगलक ने मरीजों की सुविधा के लिए मुफ्त दवा बांटने वाला अस्पताल अथवा दार-उल-सफा की स्थापना की। रोगियों के निदान तथा देखभाल के लिए इस अस्पताल में योग्य एवं अनुभवी हकीम नियुक्त किए गए। यहां रोगियों की मुफ्त चिकित्सा की जाती थी और उन्हें मुफ्त भोजन दिया जाता था। खैराती अस्पताल के व्यय के लिए सुल्तान ने कुछ गांव अलग कर दिए थे, जिसकी आय से इस अस्पताल का खर्च चलता था।

तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए कार्य

- सुल्तान ने मुस्लिम तीर्थ यात्रियों की सुख-सुविधा की उचित व्यवस्था की। तीर्थ यात्रियों को आर्थिक सहायता दी जाती थी। उनकी यात्रा को सुखद बनाने के लिए सुल्तान ने 200 सराय बनवाएं तथा डेढ़ सौ कुएं भी खुदवाये।

राज्य की आय में वृद्धि

- फिरोजशाह के शासनकाल में राज्य की आय में पर्याप्त वृद्धि हुई। इस वृद्धि के अनेक कारण थे- कृषि की उपज में पर्याप्त वृद्धि तथा उद्यानों में फलों का उत्पादन, सिंचाई कर, उद्योग-धंधे तथा व्यापार की समुन्नति, लगान वसूली में ठेकेदारी की व्यवस्था और जजिया का विस्तार एवं उसका कठोरता से वसूली।

सार्वजनिक निर्माण कार्य

- फिरोजशाह तुगलक ने सार्वजनिक उपयोगिता की अनेक प्रतिष्ठानों का निर्माण करवाया। कहा जाता है कि उसने लगभग 300 नगरों की स्थापना की। यद्यपि यह संख्या अतिरंजित प्रतीत होती है, फिर भी उसके द्वारा निर्मित नगरों में से फिरोजाबाद, कोटला, फिरोजशाही (दिल्ली में), फिरोजपुर, हिसार, जौनपुर फतेहाबाद आदि को हम आज भी पाते हैं।
- फिरोज एक कला प्रिय सुल्तान एवं महान निर्माता था। उसके शासनकाल में अनेक प्राचीन मस्जिदों, मकबरों एवं भवनों का जीर्णोद्धार किया गया तथा अनेक नए स्मारक एवं भवन बनाए गए।
- फिरोजशाह तुगलक ने सुल्तान मुइजुद्दीन की मस्जिद, हौज-ए-शम्सी (इल्तुतमिश द्वारा निर्मित) एवं हौज-ए-अलाई (अलाउद्दीन द्वारा निर्मित) की मरम्मत करवायी तथा अपने पूर्व के सुल्तानों के मकबरों का जीर्णोद्धार किया। सुल्तान ने मस्जिदों, महलों, सरायों, जलाशयों आदि का निर्माण करवाया। उसने अशोक के 2 स्तंभ शिलालेखों को खिज्राबाद और मेरठ के निकट से उठा कर दिल्ली लाया। सुल्तान के द्वारा इतने बड़े पैमाने पर निर्माण कार्य इसलिए संभव हुआ क्योंकि उसके शासनकाल में अपेक्षाकृत शांति एवं सुव्यवस्था बनी रही।

शिक्षा-साहित्य को प्रोत्साहन

- फिरोजशाह तुगलक को शिल्प एवं साहित्य से गहरा लगाव था। वह विद्वानों का आश्रयदाता था। उन्हें भेंट, उपहार, दान आदि देता और पुरस्कृत करता था। विद्वानों को जीवन निर्वाह के लिए समुचित भत्ते दिए जाते थे। फिरोजशाह तुगलक शिक्षा की प्रगति और प्रचार के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता था।
- उसने अनेक पाठशालाओं, विद्यालयों और मठों की स्थापना की। इन संस्थानों के संचालन के लिए योग्य शिक्षकों को नियुक्त किया गया। प्रायः प्रत्येक मस्जिदों में एक मदरसा होता था।
- फिरोज के शासनकाल में शैक्षिक संस्थानों की संख्या पहले से बहुत अधिक बढ़ गई। छात्रों को छात्रवृत्ति तथा अध्यापकों को वेतन राज्य की ओर से दिया जाता था। सुल्तान के प्रयासों के चलते उसके शासनकाल में शिक्षा की विशेष प्रगति हुई है।
- फिरोजशाह साहित्य एवं विभिन्न विषयों में भी गहरी अभिरुचि रखता था। इतिहास से उसे विशेष प्रेम था। जियाउद्दीन बर्नी तथा शम्से-सिराज अफीफ जैसे प्रसिद्ध इतिहासकार उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे।

शिक्षा-साहित्य को प्रोत्साहन-1

- बर्नी ने फतवा-ए-जहांदारी तथा अफीफ ने तारीख-ए-फिरोजशाही जैसे ऐतिहासिक ग्रंथ की रचना की। फिरोजशाह ने अपनी आत्मकथा फतुहात-ए-फिरोजशाही की रचना की।
- चिकित्साशास्त्र, धर्मशास्त्र, कानून तथा इस्लामी विद्या की अन्य शाखाओं के अध्ययन को भी सुल्तान ने प्रोत्साहित किया। उसने संस्कृत की अनेक पुस्तकों का फारसी में अनुवाद करवाया था।
- उनमें से एक प्रसिद्ध पुस्तक दलायल-ए-फिरोजशाही भी थी। यद्यपि फिरोजशाह शिक्षा-साहित्य को प्रोत्साहित किया, किंतु उसके शासन काल में इस क्षेत्र में भी धार्मिक संकीर्णता देखी गयी।

निष्कर्ष

- उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर इतना तो कहा ही जा सकता है कि मध्यकालीन युग में राज्य को लोक कल्याणकारी दिशा में उन्मुख करना तथा कला एवं संस्कृति के प्रति संरक्षक की भूमिका फिरोजशाह तुगलक को इतिहास में आदर्श रूप में स्थापित करता है।